7. बावजी चतुर सिंह

लेखक परिचय

राजस्थान में कर्मशील मनुष्यों के साथ ही वीतरागी भक्तों का भी प्रमुख स्थान है। ऐसे ही एक महात्मा बावजी चतुर सिंह जी हैं। इनका जन्म वि० संवत् 1936 माघ कृष्णा चतुदर्शी (9 फरवरी 1880) को हुआ। योगीवर्य महाराज चतुरसिंह जी मेवाड़ की भक्ति परंपरा के एक परमहंस व्यक्तित्व थे। इस संत ने लोकवाणी मेवाड़ी के माध्यम से अपने अनुभूत विचारों को साहित्य द्वारा जन–जन के लिए सहज सुलभ बना कर मानव की बहुत बड़ी सेवा की। वे मेवाड़ राजपरिवार से संबंधित थे। चतुरसिंहजी की वाणी दिव्य थी क्योंकि वे दिव्यता के पोषक थे। उनका चिंतन उदात्त था क्योंकि वे अनुपम सौंदर्य के उपासक थे। उनका संबोधन आत्मीय था क्योंकि वे आत्मरूप थे। इन्होंने कुल छोटे–बड़े 18 ग्रंथों की रचना की। मेवाड़ी बोली में लिखी गई गीता पर ''गंगा–जलि'' इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत दोहे 'चतुर चिन्तामणि' से उद्धृत हैं। 'चतुर चिन्तामणि' चतुरसिंह जी बावजी की प्रमुख कृतियों में से एक है। इस पोथी में चतुरसिंह जी के मेवाड़ी, हिंदी और ब्रज मिश्रित भाषा के दोहे व पद संकलित हैं। नीति और वैराग्य के संकलित दोहों में चतुर सिंह ने सामान्य लोक व्यवहार का चित्रण ललित व सुंदर सरल भाषा में किया है। वे कहते हैं कि सभी धर्मों का उद्देश्य एक है परंतु उस उद्देश्य को पाने के मार्ग अलग–अलग हैं। हमें बिना मान के किसी के भी घर में पैर नहीं रखना चाहिए। मनुष्य जन्म तो सभी लेते हैं लेकिन वही मनुष्य, मनुष्य है जो भलाई का कार्य करता है। हमें हर किसी के सामने अपने मन की बात नहीं कहनी चाहिए। उपयुक्त पात्र देखकर ही मन की बात कहनी चाहिए। जिन्हें अपने लक्ष्य का पता होता है वे कहीं भी नहीं भटकते। किसी भी वस्तु की सार्थकता उसके पर्याप्त होने में है, कम या अधिक होने से उस वस्तु की सार्थकता नहीं रहती। ताँगे चलाने वाले तो चले जाते हैं किन्तु ताँगा यहीं रह जाता है, इसी प्रकार आत्मा चली जाती है शरीर यहीं छूट जाता है। कवि ने अपने दोहों में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य के साथ–साथ नीति और लोक व्यवहार को सरल उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत किया है। उदाहरणों द्वारा किसी बात को कहने की कला में बावजी सिद्धहस्त हैं।

नीति

धरम धरम सब एक है, पण वरताव अनेक।
ईश जाणणो धरम है, जींरो पंथ विवेक।।1।।
पर घर पग नी मेळणों, वना मान मनवार।
अंजन आवै देख'नै, सिंगल रो सतकार।।2।।
रेंठ फरै चरक्यो फरै, पण फरवा में फेर
वो तो वाड़ हरयौ करै, यो छूंता रो ढेर।।3।।
कारट तो केतो फरै, हरकीनै हकनाक।

जींरी व्है वींनै कहै, हियै लिफाफो राख।।4।।
वी भटका भोगै नहीं, ठीक समझलै ठौर।
पग मेल्यां पेलां करै, गेला ऊपर गौर।।5।।
क्यूं कीसूं बोलूं कठै, कूण कई कीं वार।
ई छै वातां तोल नै, पछै बोलणो सार।।6।।
ओछो भी आछो नहीं, वत्तो करै कार।
दैणों छावै देखनै, अगनी मुजब अहार।।7।।
अपनी आण अजाणता, कईक कोरा जाय।
समझदार समझै सहज, आंख इशारा मांय।।8।।
क्षमा क्षमा सब ही करै, क्षमा न राखै कोय।
क्षमा राखिवैं तै कठिन, क्षमा राखिवौ होय।।9।।
विद्या विद्या वेल जुग, जीवन तरु लिपटात
पढिबौ ही जल सींचिबौ, सुख दुख को फल पात।।10।।

वैराग्य एवं चेतावनी

रेल दौड़ती ज्यूं घणा, रूंख दोड़ता पेख।
तन नै जातो जाण यूं, दन नै जातो देख।।11।।
गाता रोता नीकळ्या, लड़ता करता प्यार।
अणी सड़क रै ऊपरै, अब लख मनख अपार।।12।।
गोखड़िया खड़िया रया, कड़िया झांकणहार।
खड़खड़िया पड़िया रया, खड़िया हाकणहार।।13।।
गेला नै जातो कहै, जावै आप अजाण।
गेला नै रवै नहीं, गेला री पैछाण।।14।।
धन दारा रै मांयनै, मती जमारो खोय।
वणी अणी रा वगत में, कूण कणी रा होय।।15।।

•••

शब्दार्थ

वरताव–व्यवहार/ ईश–ईश्वर/ पंथ–रास्ता, मार्ग/ पर–दूसरे/ मेळणों–रखना/ मनवार–सत्कार/ अंजन–इंजन/ सिंगल–सिग्नल/ रैंठ–रहठ/ चरक्यो–चरखा/ पण –परंतु/ फरबा–फिरने/ हर्‌यो–हरा–भरा/ छूंता–छिलका/ कारट–पोस्टकार्ड/ हकनाक–गोपनीय/ हियै–हृदय/ कठै–कहाँ/ बोलणो–बोलना/ वातां–बातें/ ठौर – स्थान/ पग–पैर/ मेल्यां–रखना/ गेला–रास्ता/ गौर–विचार/ ओछो–कम/ आछो – अच्छा/ अगनी–अग्नि/ अहार–आहार/ कईक–कोई–कोई/ कोरा–व्यर्थ/ वेल–बेल, लता/ तरु–वृक्ष, पेड़/ घणा–बहुत/ रूंख–पेड़/ दन–दिवस, दिन/ जातो–जाता

हुआ / जाण–पहचान, समझ / गोखड़िया–गोखड़े / खड़खड़िया–ताँगे / हाकणहार – हाँकने वाले / अजाण–अज्ञानी / गेला–मूर्ख

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दूसरों के घर बिना मान–मनुहार के जाने पर क्या होता है ?
   (क) स्वागत होता है (ख) अपमान होता है
   (ग) नाच–गाना होता है (घ) सिग्नल मिलता है ( )
2. रहट चलता है तब क्या होता है –
   (क) खेतों को पानी मिलता है (ख) छिलकों का ढेर होता है
   (ग) अकाल पड़ता है (घ) गन्ने का रस मिलता है ( )

   उत्तरमाला– (1) ख (2) क

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. चतुरसिंह जी के अनुसार धर्म क्या है ?
2. सिंगल का शब्दार्थ क्या है ?
3. छिलकों का ढेर कौन करता है ?
4. बातों को गोपनीय कौन रखता है ?
5. कैसा व्यक्ति नहीं भटकता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. रहट और चरखे में क्या अंतर है ?
2. बिना मान के दूसरों के घर पैर क्यों नहीं रखना चाहिए ?
3. इंजन सिग्नल की बात क्यों मानता है ?
4. 'गोखड़िया खड़िया' वाले पद में किस बात की ओर संकेत है ?
5. मूर्ख व्यक्ति की बात मानने से क्या होता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित दोहों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) पर घर पग.....सिंगल रो सतकार।
   (ख) रैंठ फरै.....छूंता रो ढेर।
   (ग) कारट तो केता.....हियै लिफाफो राख।
   (घ) ओछो भी .....मुजब अहार।
2. ''बावजी चतुरसिंह जी वाणी दिव्य थी।'' उक्त पंक्ति के आलोक में चतुरसिंह जी के नीति और वैराग्य संबंधी विचारों की समीक्षा कीजिए।

•••

यह भी जानें

कारक चिह्न या परसर्ग

(क) हिंदी के कारक चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक् लिखे जाएँ। जैसे – राम ने, राम को, राम से, स्त्री का, स्त्री से, सेवा में आदि। सर्वनाम शब्दों में ये

चिह्न प्रातिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ। जैसे – तूने, आपने, तुमसे, उसने, उसको, उससे, उसपर, मुझको, मुझसे आदि। (मेरेको, मेरेसे आदि रूप व्याकरण सम्मत नहीं हैं।)

(ख) सर्वनामों के साथ यदि दो कारक चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाए। जैसे – उसके लिए, इसमें से।

(ग) सर्वनाम और कारक चिह्न के बीच 'ही', 'तक' आदि निपात हों तो कारक चिह्न को पृथक लिखा जाए। जैसे – आप ही के लिए, मुझ तक को।

•••